पुराणों में स्त्रीविमर्श

SNKT2006 - संस्कृतवाङ्मये स्त्री-विमर्शः

एम० ए० द्वितीयसत्रम्

डॉ० विश्वेशवाग्मी

सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः

महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः, बिहारः

vishujnu@gmail.com

विषयक्रम

- पुराणों का सामान्य परिचय –
  - पुराण का अर्थ -
  - पुराण का लक्षण एवं पुराणों की संख्या -
  - विषयवस्तु -
- प्रमुख पुराणों में स्त्रियों की स्थिति -
  - कन्या के रूप में स्त्री -
  - गृहस्थ-आश्रम में स्त्री –
  - पतिव्रता स्त्री की महिमा -
  - स्त्री शिक्षा –
  - प्रसिद्ध पौराणिक स्त्री पात्र -

पुराणों का सामान्य परिचय

- **‘पुराण’ का अर्थ –**
  - ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह ।- अर्थव० ११/७/२४
  - इतिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम् । - छान्दोग्योपनिषद् ७/१/२
  - पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वै स्मृतम् । - वायुपुराण १/२५३
- **पुराणों का लक्षण एवं संख्या -**
  - सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
    वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ - विष्णुपुराण ३/६/२४
  - मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।
    अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्॥

पुराणों की विषयवस्तु

- धार्मिक सामग्री
- दार्शनिक सामग्री
- ऐतिहासिक सामग्री
- भौगोलिक सामग्री
- आचार-विचार विषयक सामग्री
- ज्ञान-विज्ञान की सामग्री

प्रमुख पुराणों में स्त्रियों की स्थिति

कन्या के रूप में –

- ✓ पुराणों में कन्या को भी सुख का साधन माना गया है। पितृकुल की आपत्तियों से रक्षा का कार्य पुत्र एवं पुत्री दोनों- कुन्ती, लोपामुद्रा, माधवी, सुकन्या, शर्मिष्ठा।
- ✓ वामन पुराण के अनुसार कन्या का दर्शन मंगलमय।- वामन पु० १४/३५/३६
- ✓ वैवस्वत मनु की धर्मपत्नी ने कन्या की याचना की थी-

तत्र श्रद्धा मनोः पत्नी होतारं समयाचत।

दुहित्रर्थमुपागम्य प्रणिपत्य पयोव्रतम्॥ - श्रीमद्भागवत्पुराण ९/१/१४

इला इसी यज्ञ का प्रसाद थी।

- ✓ राजा अश्वपति अपनी पुत्री सावित्री के जन्म से अत्यन्त प्रसन्न।- ब्रह्मवैवर्त पु० १५/२८

गृहस्थाश्रम में स्त्री

- गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आधार -
- स्त्री गृहस्थाश्रम का आधार-
- स्त्री भारतीय समाज की रीढ के रूप में –
- पुरुष भार्या के बिना अर्धपुरुष ही रहता है –

पुमानर्द्धपुमाँस्तावद् यावद् भार्या न विन्दति ।- भविष्यपुराण, सप्तम अध्याय

- विष्णुपुराण के अनुसार नर-नारी के रूप में संयुक्त शक्ति ही सृष्टि का मूलकारण-

अर्धनारी नरवपुः प्रचण्डोऽति शरीरवान् ।
विभज्यात्मानमित्युक्त्वा तं ब्रह्मान्तर्दधे ततः ॥

- ✓ **पद्मपुराण के अनुसार गृहस्थाश्रम सुख के लिए तथा वह पत्नीमूलक होता है -**

गृहाश्रमः सुखार्थाय पत्नीमूलं ही तत् सुखम् । - पद्मपुराण २२३/३६/७

- ✓ **मार्कण्डेय पुराण के अनुसार गृहस्थाश्रम में पति एवं पत्नी की परस्पर अनुकूलता त्रिवर्ग की साधिका** –

यदा भार्या च भर्त्ता च परस्परवशानुगो ।
तदा धर्मार्थकामानां त्रयाणामपि सङ्गतम् ।। - मार्कण्डेयपुराण ७/७१

- ✓ **पुरुष का सबसे बडा मित्र -**

नास्ति भार्यासमं मित्रम् । - बृहद्धर्मपुराण, पूर्वखण्ड २/३६

- ✓ **सबसे बडा मार्गदर्शक -**

नरं नारी प्रोद्धरति मज्जन्तं भववारिधी । - स्कन्दपुराण, कुमारिकाखण्ड

पतिव्रता स्त्री की महिमा

- पतिव्रता नारी केवल परिवार ही नहीं वरन् राष्ट्र एवं संस्कृति का गौरव।

- पुराणों के अनुसार पृथिवी के सभी तीर्थ नारी के चरणों में विद्यमान-

  पृथिव्यां यानि तीर्थानि सतीपदेषु तान्यपि। - ब्रह्मवैवर्तपुराण ३/५/११९

- पतिव्रता नारी के दर्शनमात्र से ही घर पवित्र हो जाता है-

  यथा गंगावगाहिनः शरीरं पावनं भवेत्। तथा पतिव्रतां दृष्ट्वा सदनं पावनं भवेत्॥ - स्कन्दपुराण ७/१३

- पतिव्रता नारी का चरण जिस भू-भाग पर पडता है, वह स्थान तीर्थ हो जाता है। – स्कन्दपुराण ७/१९

माता के रूप में स्त्री का महत्त्व

- पुराणों में भी वैदिक साहित्य की तरह माता का स्थान सर्वोच्च – **मातृदेवो भव**

- पुराणों के अनुसार पुत्र के लिए माता के समान दूसरा कोई गुरु नहीं। पिता एवं माता में से प्रथम माता की चरण-वन्दना करे-

  नास्ति मातृसमो गुरु। - बृहद्धर्मपुराण

  गुरूणां चैव सर्वेषां माता परमो गुरुः। - महाभारत १/२११/१०

- जननी, माता, अम्बा, मान्या, वदान्या।

- ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार जिसके घर में माता अथवा प्रियवादिनी भार्या नहीं है उसका घर शून्य हो जाता है, उसे अरण्य चले जाना चाहिए; क्योंकि उसका घर अरण्य के समान हो जाता है-

  यस्य माता गृहे नास्ति गृहिणी वा सुशासिता।

  अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥ - ब्रह्मवैवर्तपुराण

स्त्री-शिक्षा

सभी विद्याओं में पारङ्गतता -

- भविष्य पुराण में स्वर्णवती नामक स्त्री का सभी विद्याओं में पारङ्गतता का वर्णन-

ज्ञात्वा स्वर्णवती देवी सर्वविद्या विशारदा। - भविष्यपुराण २४/५०१

सङ्गीत एवं नृत्य शिक्षा –

- स्कन्दपुराण में नागकन्या रत्नावली का अपनी दो सखियों के साथ संगीत का उल्लेख-

तिस्रोऽपि गीतं गायन्ति लसगन्धार सुन्दरम्।

रास मण्डलभेदेन लास्यं तिस्रोऽपि कुर्वते ॥ - स्कन्दपुराण, काशीखण्ड

- संगीत नृत्य आदि के विषय में स्कन्दपुराण में अनेक उदाहरण। यथा- काशी में वीरेश्वर लिङ्ग पूजन के समय पत्नियों का अपने पतियों के साथ नृत्य एवं गायन-

गायन्ती सुस्वरं याता परौ निर्वाणभूमिकाम्। - स्कन्दपुराण, काशीखण्ड

चित्रकला –

- पद्मपुराण में रङ्गवेणी का उल्लेख-

सारङ्ग नाम्नो गोपस्य कन्याऽभूच्छुभलक्षणा ।
रङ्गवेणीति विख्याता निपुणा चित्रकर्मणि ॥ - पद्मपुराण, पातालखण्ड ७२/२०

- चित्रकला का सबसे प्राचीन स्रोत विष्णुधर्मोत्तर पुराण ।

राजनीति एवं सैन्यशिक्षा –

- पुराणों में अनेकत्र वीराङ्गनाओं द्वारा युद्ध एवं राजनीति का उपदेश । यथा- मार्कण्डेय पुराण में राजमहिषी इन्द्रसेना द्वारा अपने पुत्र दम को राजनीतिविषयक उपदेश ।
- कल्कि पुराण के तृतीय अंश में एक स्त्री का कल्कि के साथ युद्ध का वर्णन । - कल्किपुराण १५/९
- वायुपुराण में भृगु ऋषि की पत्नी काव्यमाता द्वारा असुरों को अभय एवं विष्णु तथा इन्द्र को युद्ध की चुनौती । जिसके कारण युद्ध को रोकना पडा । - वायुपुराण ३५/१३५

प्रसिद्ध पौराणिक स्त्री-पात्र

- माता अदिति
- आदि शक्ति दुर्गा-
  - संसार की समस्त स्त्रियाँ दुर्गा का ही स्वरूप हैं।
- सती पार्वती
- सती अनुसूया
- सती सीता
- सती शाण्डिलिनी
- सती सुकन्या
- सती मदालसा
- सती गान्धारी
- सती कुन्ती
- सती द्रौपदी
- सती शैव्या
- सती सावित्री
- शकुन्तला
- कैकयी
- सुदेवा
- माद्री
- उत्तरा

सन्दर्भ-

- धर्मशास्त्र का इतिहास, डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९९२
- The Position of Women in Hindu Civiligation, A.S. Altekar, Banaras, 1938.
- Women in Ancient India, Clarisse Bader, Chowkhamba Sanskrit Series Varanasi, 1964.
- प्रमुख पुराणों में नारी-चित्रण, श्रीमति मनोज मिश्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
- प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, डॉ० गजानन शर्मा, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद

धन्यवादः